आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025

Received: 14/04/2025; Accepted: 21/04/2025; Published: 28/08/2025

लेख

'मौन' और पी.वी. विजयन की कविता

प्रो. डॉ. प्रमोद कोवप्रत

वरिष्ठ आचार्य, हिन्दी विभाग

कालिकट विश्व विध्यालय

मलप्पुरम जिला, केरल

फोन: 9447887384

drpramodcu@uoc.ac.in

प्रो. डॉ. प्रमोद कोवप्रत, 'मौन' और पी.वी. विजयन की कविता आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025**,(186 -189) https://doi.org/10.5281/zenodo.17072669

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

केरल के हिंदी कवियों में डॉ. पी .वी . विजयन का नाम विशिष्ट है। 'कथ्य और तथ्य', 'नदी को बहने दो' , 'शब्द आदमी है' , 'शहर में चीता ' आदि काव्य संग्रह उनके कवि व्यक्तित्व को परिपक्वता एवं प्रौढता प्रदान करते हैं। जीवन की वास्तविकता को अपने सामाजिक परिवेश में वाणी देने की कला में वे माहिर हैं। उनके शब्दों में - " मैंने अपने जीवन के भोगे हुए क्षणों को , जीवन परिवेश में दृष्टिगत तथ्य , साक्षात्कृत सत्य को यथासंभव वाणी देने का प्रयास किया है ।"

वाणी की शक्ति पर तथा कविता की ताकत पर वे लिखते हैं । उनकी चर्चित रचना 'कविता ' में वे बताते हैं -

हर शब्द के पीछे ना कोई देवता है न ब्रह्म
हर शब्द के पीछे आदमी है कोई न कोई
उसकी संवेदना है
हां शब्द आदमी है

'शब्द आदमी' की परिकल्पना 'शब्द ब्रह्म' की परिकल्पना का ठीक उल्टा है ।यही कवि विजयन का सामाजिक सरोकार है । ये सरोकार एवं प्रतिबद्धता के कवि हैं । उनकी पुस्तक 'नदी को बहने दो' में संकलित कविता है 'मौन' और 'आज की कविता' । कवि मानते हैं कि सही वस्तु को सही और गलत को गलत कहना आज की कविता का अंतरबोध है ,उसकी पहचान है या उसकी ताकत है । 'आज की कविता ' में कवि का मानना है की कविता सिर्फ चप्पल और पायल में नहीं है वह तो दृष्टि में है द्रष्टा में है ।अर्थात जब हम बेहतर तरीके से बातों को समझते हैं तो हमारा दृष्टिकोण , नरेशन और इंटरप्रिटेशन बदलते हैं ।

'नदी को बहने दो ' कविता में गहन पर्यावरण चेतना देखने को मिलती है । हम देखते हैं आज पानी की समस्या बड़ी समस्या है । नदी , तालाब , नाले , पोखर सब मर रहे हैं ।तथाकथित विकास के नाम पर हमने नदी की आसन्न मृत्यु के वेग को बढ़ा दिया है। नदियों का दम घुट रहा है । बांधों की संस्कृति में नदियों का मरना स्वाभाविक है। नदी के प्रवाह को रोकना वास्तव में नदी की हत्या करना जैसा है ।जहां प्रवाह नहीं है ,वहां नदी नहीं ,वहां जीवन नहीं। हमारी सभ्यता का उदय ही नदी के किनारे हुआ है । इसलिए कवि की प्रार्थना है सरकार से -

हे सरकार
इस नदी को वहाँ बहने दो
जहां वह बहना चाहती है

'मौन' उनकी एक सशक्त कविता है , जो समकालीन संवेदना से ओतप्रोत है। विजयन ने मौन पर कई कविताएं लिखी हैं ,जिनमें प्रमुख हैं - मौन , मौन को तोड़ो , वेणुरंध्र आदि । बदले हुए परिवेश में मौन रहना या चुप रहना कितना खतरनाक है ।कवि हमें इसके प्रति अवगत कराते हैं ।कवि का मक्सद यही है । रोने वाले बच्चों को ही जल्दी दूध मिलाने वाला है यह वर्तमान समय की कठोर सच्चाई है ।चुप रहने से हमारा हक मिलने वाला नहीं है ।वह कोई ना कोई वश्य छीन ले सकता है । अर्थात हमें आज की विशेष दुनिया में प्रतिक्रिया रहित होना खतरनाक ही नहीं , एक प्रकार से ज़िंदा रहकर मरने के समान है । जो जागत है सो पावत है और जो सोवत है वह खोवत है यह बात यहाँ सौ फीसदी लागू होती है ।

कवि पी. वी. विजयन अज्ञेय की पंक्ति को उदाहरण के रूप में लेते हैं , जिसमें लिखा है 'मौन भी अभिव्यंजना है /जितना तुम्हारा सच है / उतना ही कहो।' कवि इस प्रकार की पुरानी बातों एवं पंक्तियों को आज के संदर्भ में मौत का निशान मानते हैं ।यहां मौन को अभिव्यक्ति या संप्रेषण का सशक्त माध्यम बताया गया है । मौन के कई गुण होते हैं , जो व्यक्ति अपनी भावनाओं की पराकाष्ठा में होता है, तब मन की अभिव्यक्ति का मूल्य बढ़ जाता है । कभी-कभी हमारी जटिल मनस्थिति को मौन द्वारा ही अभिव्यक्त कर पाएंगे । वास्तविकता यह है कि मौन की बहुत बड़ी ताकत होती है । मौन रहना अभी परिपक्वता एवं प्रौढ़ता का भी लक्षण बन जाता है । अज्ञेय ने बहुत गहराई में मौन को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया । मौन के क्षण कभी अत्यंत मधुर भी होते हैं । मगर कवि पी.वी. विजयन अज्ञेय की उक्त पंक्ति के लिए नया पाठ एवं भाषा रचना चाहते हैं । मौन को तोड़ना एक प्रकार से प्रतिरोध की दीवार को खडा कर देना भी है । हमारे

अंदर की सारी भावनाएँ एवं हृदय की पीडाएँ तभी बाहर अभिव्यक्त होती हैं। यहाँ भारतेन्दु की पंक्ति 'मिटे न हिय को सूल' सार्थक हो जाती है। मतलब है कि अपने मन की भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को मन में ही बटोरकर रखने से व्यावहारिक तल पर कोई फायदा नहीं है। जीवन की व्यावहारिकता और वास्तविकता से मुठभेड करते समय मुंह खोलना ही युक्तिसंगत लगता है तभी हम अपने पसंद का जीवन जी सकते हैं। समाज में जहाँ चारों ओर अन्याय एवं अधर्म का बोलबाला है तो हमे बोलकर एवं लडकर ही धर्म एवं न्याय की स्थापना करनी पड़ती है। साथ ही अपने जीना के अधिकार को , संविधान प्रदत्त मूल अधिकार को एवं मानवाधिकार को सुरक्षित रखने के लिए अक्सर चुप्पी के छिलकों को तोड़ना परम आवश्यक बन जाता है। कवि को समय के अनुभव ने यही सिखा दिया है।

हमारा समय अत्यंत पेचीदा है। जहां हमें खुलकर बोलना चाहिए वहां चुप रहे तो हमारी पराजय लगभग संभव है। हमारी पराजय ही नहीं आत्मा की मृत्यु तक उससे संभव हो जाती है। आज की सफल जिंदगी आवाज, चीख और ललकार में ही पल्लवित होती दिखती है। इसलिए चीखने - चिल्लाने वाले अपना सब कुछ कमा लेते हैं और कार्य साधन करते हैं। चुप रहना सबकुछ खोना जैसा है , यहाँ तक कि ज़िन्दगी भी।

कवि की राय में आज कई प्रकार के लोग हमारे बीच मौजूद हैं। उसमे चीखने वाले और ललकारने वाले हैं, कुछ आक्रोश करने वाले लोग हैं, कुछ लोग गाली सुनने वाले हैं, तो कुछ ताली बजाने वाले हैं और कुछ नारेबाजी करने वाले हैं। मतलब सब अपना कार्य साधन किसी ने किसी तरह शोर मचाकर ही करते रहते हैं। कवि के शब्दों में - 'हर कहीं आवाज़ है ,आवाज़ हैं,आवाज़ है '।

कवि विजयन समय को पहचानने की प्रेरणा देते हैं।उनका हमारे समय के लोगों से आग्रह है कि चुप रहने वाले एकदम बेवकूफ बन जाते हैं या मूर्ख माने जाएंगे। इस जीवन में वह कभी भी सफल नहीं हो सकता है। कवि के शब्दों में -

आवाज करते शख्स की
पहचान होती भीड़ में
पहचान वाले शख्स की ही
जीत होती होड़ में

अर्थात वर्तमान जीवन एक प्रतियोगिता है, एक होड है। स्पर्धायुक्त समय में लाभ ,जीत आदि शब्द महत्वपूर्ण बन गए हैं। आज पीछे रहने वाले को पिछलग्गू ही लोग मानते हैं। वे हमेशा के लिए दरकिनार किए जायेंगे। हाशिएकरण की इस प्रक्रिया से बचाना वर्तमान राजनीतिक ,सामाजिक ,सांस्कृतिक माहौल में परम आवश्यक बन जाता है। इसलिए पी.वी. विजयन का मानना है कि आज समाज एवं राजनीति में लोग चीख - चिल्लाकर ही अपना काम चलाते हैं। दादागिरी और गुंडागर्दी की राजनीति धमकी , शोर और चीख के बल पर चलता है। ऐसे लोगों को विजय प्राप्त होती है। कवि के शब्दों में एक बात स्पष्ट है।अगर कविता को बारीकी से हम समझेंगे तो हमें सच्चाई का पता चलेगा।कविता की पंक्तियां हैं -

आजकल की राजनीति का ही तो हाल है
चीख का कमाल है तो कामयाबी हासिल है

वास्तव में 'मौन' कविता समसामयिक माहौल में अत्यंत प्रासंगिक और सारगर्भित है । कवि पी.वी. विजयन हमें चेतावनी दे रहे हैं कि आपको क्या हार का हकदार बनना है या स्वयं चुप रहकर बेवकूफ बनना है । प्रतिक्रिया विहीन रहना मृत्यु के समान है ।जिंदा होकर मुर्दे के समान जीन से क्या फायदा है । समय के रुख को हमें पहचानना चाहिए। वर्तमान गंदी राजनीति का एक पहलू भी कवि विजयन यहां उजागर करते हैं। साथ ही आवाज़ की दुनिया में अपनी आवाज़ को बुलंद रखना , अपने वजूद को बरकरार रखने के लिए आवश्यक हो जाता है । जहां चीखना -चिल्लाना है ,जहां शोर मचाना है , जहां किसी को ललकारकर कर चुनौती देना है तो वे सब करना समय की मांग है । मौन तोड़ना वर्तमान समय में कामयाबी का राज़ बन जाता है । वास्तव में 'मौन' कविता मौन नहीं एक मुखरित कविता ही है ।

****